

25/10/24

प्राणकी पेश हुई। वकील की  
सहाय्य मिली की ओर से कोई  
आश्चर्य नहीं है। बार-बार प्रयास  
कराई गई। बावजूद कावाज व  
को कोई आश्चर्य नहीं माना है।  
अतः मिली का वास्तविक अर्थ प्रकट  
अपने अर्थों के स्थिति में प्रकट कर  
है। प्राणकी प्रकृत सुधार होकर चर  
रू चर है।

 